SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

हिंदी फिल्मी गीतों में गाँधी और उनका जीवन दर्शन

विभाषा मिश्र, हिंदी विभाग,
पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
विभाषा मिश्र, हिंदी विभाग,
पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 28/09/2020
Revised on : -----
Accepted on : 06/10/2020
Plagiarism : 03% on 29/09/2020

Plagiarism Checker X Originality Report

Similarity Found: 3%

Date: Tuesday, September 29, 2020
Statistics: 56 words Plagiarized / 1896 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

fganh fQYeh xhrksa esa xk;/kh vkSj mudk thou n'kZu egkRek xk;/kh ds O;fäRo vkSj —frRo dk vuqeku blls yxk;k tk ldrk gS fd ^xk;/kh^ dgus ls mUgha dk cks/k gksrk gS] tcfd ^xk;/kh^ miuke ds vusd gSa] vkSj vkxs Hkh gksaxsA fo'o bfrgkl esa xk;/kh & tSlk O;fäRo nqyZHk gS] D;ksafd os ns'k] dky] Hkk"kk] /keZ] tkfr] lEçnk; dh lhekvks als ijs ,d lPps ekuo ds :i esa Hkkjr Hkwfe esa vorfjr gq, vkSj vius thou dks ,d vkn'kZ –"Vkar cukdj vej dj fn;kA

शोध सार

महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व और कृतित्व का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि 'गाँधी' कहने से उन्हीं का बोध होता है, जबकि 'गाँधी' उपनाम के अनेक हैं, और आगे भी होंगे। विश्व इतिहास में गाँधी – जैसा व्यक्तित्व दुर्लभ है, क्योंकि वे देश, काल, भाषा, धर्म, जाति, सम्प्रदाय की सीमाओ ंसे परे एक सच्चे मानव के रूप में भारत भूमि में अवतरित हुए और अपने जीवन को एक आदर्श दृष्टांत बनाकर अमर कर दिया।

मुख्य शब्द

गाँधी, फिल्मी गीत।

गाँधीजी ने बिना तोप व बंदूक के जिस प्रकार स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी, उससे अंगरेजी सरकार भी काँपने लगी थी। उन्होंने हिंदू व मुसलमान, सिख व पठान सबके हृदय में आजादी का अलख जगाकर भारत को एक स्वतंत्र राष्ट्र बनाने में अपना योगदान दिया।

सन् 1954 में सत्येन बोस के निर्देशन में बनी फिल्म 'जागृति' में गाँधीजी के इन्हीं विचारो ंको दर्शाया गया है। इस फिल्म का यह गीत आज भी सर्वप्रिय है –

''दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल
साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल''

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजी का सर्वप्रिय भजन जिसे सबसे प्रसिद्ध भारतीय भजन भी कहा जाता है।

1998 में बनी फिल्म 'कुछ–कुछ होता है' जिसे 'करण जौहर' ने निर्देशित किया, उसमें यही भजन भारतीय शैली व पाश्चात्य शैली में दर्शाया गया है –

'रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्लाह तेरो नाम
सबको सन्मति दे भगवान'

यही वह भारत भूमि है जहाँ गंगा, जमुना, सरस्वती का संगम है, यही वह भूमि है जहाँ अनेक महान ऋषि व मुनि हुए। यह वही भूमि है जहाँ सभी धर्म व जाति के लोग मिलकर रहते हैं। महात्मा गाँधीजी के चार आधार भूत सिद्धांत –सत्य, अहिंसा, प्रेम और सद्भाव को प्रदर्शित करता यह गीत आज भी जनमानस में प्रसिद्ध है–

'जहाँ डाल–डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा
वो भारत देश है मेरा..........
जहाँ सत्य–अहिंसा और धर्म का पग–पग लगता डेरा
वो भारत देश है मेरा..........– {सिकंदर–ऐ–आजम (1965)}

हिंदू–मुसलमान की लड़ाई यह थी कि हिंदुस्तान तेरा नहीं मेरा है। इस पर गाँधीजी ने कहा भी है कि हिंदुस्तान के मालिक तो वे हैं जो धरती में पसीना डालते हैं और वहाँ सबके लिए अन्न उगाते हैं। बस उत्पादन को ही अपना भाग मानकर बाकी लूट–खसोट का काम वाचालों के लिए छोड़ देते हैं। इसलिए हिंदुस्तान किसी का है तो उसका है जो इन मूक–मेहनती जनता का अकिंचन सेवक है, जो मानों प्रायश्चित की भावना से कार्य करता है।

गाँधीजी ने किसानों को देवतुल्य माना है। इस पर केंद्रित गीत –

'मेरे देश की धरती सोना उगले–उगले हीरे मोती
मेरे देश की धरती......... {उपकार (1967)}

इसी तरह धर्म के मामले में ईश्वर और अल्लाह को एक प्रकार से मिलाकर उन्होंने बता दिया कि भगवान किसी का नहीं सबका है और जो अपनी कुर्बानी देता है उसे पाता है। इसी भाव पर केंद्रित यह गीत –

'अल्लाह तेरो नाम
ईश्वर तेरो नाम
सबको सन्मति दे भगवान.....' – {हम दोनों (1961)}

गाँधीजी ने हमेशा कहा है :

''श्रम पूँजी से कहीं श्रेष्ठ है, मैं श्रम और पूँजी का विवाह करा देना चाहता हूँ, वे दोनों मिलकर आश्चर्यजनक काम कर सकते हैं।''

कहा भी गया है– 'श्रम एव जयते' अर्थात् श्रम की कभी हार नहीं होती। इसी को चरितार्थ करता यह गीतः

'साथी हाथ बढ़ाना
एक अकेला थक जाए तो
मिलकर बोझ उठाना' – {नया दौर (1957)}

निदा फाजली जी ने अपने एक प्रसिद्ध गजल में लिखा है :

'दीवारें उठाना तो हर युग की सियासत है
ये दुनिया जहाँ तक है इंसा की विरासत है
गेहूँ का रूप एक है जल का स्वरूप एक है
आँगन जुदा–जुदा ही सही सूरज की धूप एक है
मंदिर में जो मूरत है मस्जिद में वो कुदरत है'

सत्य और अहिंसा, न्याय और अन्याय, हक और काबिल के बीच संघर्ष हमेशा होता रहा है, लेकिन इंसान का धर्म यही है कि वो सत्य और न्याय के पक्ष में खड़ा हो। नफरत धर्म नहीं सीखाता लेकिन धर्म को माध्यम बनाकर ही मजहब की दीवार खड़ी की जाती है।

'तू हिंदू बनेगा न मुसलमान बनेगा
इंसान की औलाद है इंसान बनेगा
मालिक ने हर इंसान को इंसान बनाया
हमने उसे हिंदू या मुसलमान बनाया
कुदरत ने तो ब़ख्शी थी हमें एक ही धरती
हमने कहीं भारत कहीं ईरान बनाया' – {धूल का फूल (1959)}

महात्मा गाँधीजी ने अपने घरों के दरवाजे – खिड़कियो ंको खुला रखने की बात कही थी, ताकि कहीं से भी आने वाली शुद्ध व ताजा (प्रज्ञा और विज्ञान) हवा आ सके। उन्होंने हमेशा इंसान को स्वच्छ रहने को कहा है फिर चाहे वह शरीर की स्वच्छता हो या घर की या फिर अपने आस–पास की। हम गर्व से कहते हैं कि गंगा सबसे शुद्ध है मगर लगातार बढ़ते प्रदूषण से क्या गंगा पवित्रता विद्यमान है।

''जो जिससे मिला, सीखा हमने, का संकेत भला यही तो है। मतलब के लिए अंधा होकर आज आदमी रोटी से खेलने लगा है।''

'होठों पे सच्चाई रहती है, जहाँ दिल में सफाई रहती है
हम उस देश के वासी है, जिस देश में गंगा बहती है....'
जो जिससे मिला सीखा हमने, गैरों को भी अपनाया हमने
मतलब के लिए अंधे होकर, रोटी को नहीं पूजा हमने'
अब हम तो क्या सारी दुनिया, सारी दुनिया से कहती है
हम उस देश के वासी हैं जिस देश में गंगा बहती है' – {जिस देश में गंगा बहती है (1960)}

जिस आधुनिक भारत का स्वप्न बापू ने देखा था, उसे देश के युवाओं ने अपनी योग्यता से सच कर दिखाया। सभी ने साथ मिलकर गाँधीजी के सपनों के भारत का निर्माण किया। इस पर केंद्रित यह प्रसिद्ध गीत :

'छोड़ो कल की बातें
कल की बात पुरानी
नए दौर में लिखेंगे
मिलकर नई कहानी
हम हिंदुस्तानी.....' – {हम हिंदुस्तानी (1960)}

गाँधीजी मानव सेवा को ही ईश्वर की सच्ची आराधना मानते थे। वे कहते थे :

''जो इंसान को प्यार नहीं कर सकता, वह भगवान को क्या खाक प्यार करेगा।''

आदमी को आदमी समझना उसे समानता का दर्जा दिलाने और सम्मान पूर्ण जीवन के लिए जीने की प्रेरणा देना ही गाँधीजी की सबसे बड़ी देन है। उन्होंने कहा भी है :

''आपको मानवता में विश्वास नहीं खोना चाहिए, मानवता एक समुद्र है, यदि समुद्र की कुछ बूंदे सूख जाती है, समुद्र मैला नहीं होता है।''

गाँधीजी ने तीन बंदरों के जो प्रतीकात्मक संकेत हम सबके समक्ष प्रस्तुत किये हैं, इसका सीधा–साधा अर्थ यही है कि गलती से भी हमें किसी का अहित नहीं सोचना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा है कि पाप से घृणा करो पापी से नहीं। इसी पर केंद्रित यह गीत :

'ज्योत से ज्योत जलाते चलो
प्रेम की गंगा बहाते चलो
राह में आए जो दीन–दुःखी
सबको गले से लगाते चलो' – {सन्त ज्ञानेश्वर (1964)}

गाँधीजी का कहना है कि व्यक्ति पड़ोसी की सेवा तथा मानवता की सेवा साथ–साथ करता है। यही नहीं, उनकी राष्ट्रीयता की भावना में अंतरराष्ट्रीयता का विरोध नहीं, समावेश है। उनके शब्दो में –

"The individual being free sacrifice himself for the family, the latter for the village, the village for the district, the district for the province, the province for the nation, the nation for all-"

इस प्रकार गाँधी एक–एक व्यक्ति के अच्छा होने, विकसित होने, उन्नत होने की बात करते थे और उसी के अनुरूप अपने जीवन में आचरण करते थे।

'जियो और जीने दो' का गाँधी –दर्शन विश्व मानवता के लिए एक महान संदेश है :

''नजर वो जो दुश्मनों पे भी मेहरबां हो
जुबाँ वो जो इक प्यार की दास्ताँ हो
जमाने में सब जिंदगी यूँ गुजारें
गुलिस्तां में रहती हों जैसे बहारें
ये कहानी यही है, जिंदगानी यही है
जियो आप औरों को भी जीने दो''
किसी ने कहा है, मेरे दोस्तों...
'बुरा मत सुनो, बुरा मत देखो
बुरा मत कहो........' – {आया सावन झूमके (1969)}

गाँधीजी के तमाम प्रयासों व सरकारी स्तर पर अस्पृश्यता निवारण के तमाम उपायों, कानूनों के बाद भी आज जब–तब घटनाएँ घटित होती रहती हैं। जात–पात, भाषा–प्रांत, कौम –मजहब भारत की बड़ी समस्याएँ हैं। ''आज वर्ग –संघर्ष बढ़ा है, भाषाई विवाद सिर चढ़कर बोल रहा है। धर्म की राजनीति ने राजनीति का धर्म ही भूला दिया है। ''एक मात्र बच्चे ही ऐसे हैं जिनकी नजरों में मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे में कोई भी अंतर नहीं है। वर्तमान युग में जरूरत इसी बालमन की है, जो निष्कपट हैं।

इसी भावना पर केंद्रित यह गीत :

'बच्चे मन के सच्चे
सारे जग के आँख के तारे
ये वो नन्हें फूल हैं जो
भगवान को लगते प्यारे' – {दो कलियाँ (1970)}

वर्तमान स्थिति यह है कि ''भगवान राम केवल धार्मिक मिथक नहीं रह गए हैं, बल्कि वह एक संवैधानिक अस्तित्व हैं और हमारी राष्ट्रीय संस्कृति की अंतर्निहित वास्तविकता हैं।'' जिस रामराज्य की कल्पना महात्मा गाँधीजी ने कभी की थी, वह वर्तमान परिदृश्य में कितना सार्थक हुआ या नहीं, कह नहीं सकते, मगर पारिवारिक स्तर पर देखा जाए तो परिवार का महत्व ही घटता जा रहा है। माता–पिता और भाई–भाई के बीच ही वर्तमान युग में खींचतान मची हुई है।

इस भाव को दर्शाता यह गीत :

'हे रामचंद्र कह गए सिया से, ऐसा कलयुग आएगा
हंस चुकेगा दाना–तिनका, कौआ मोती खायेगा
धर्म भी होगा कर्म भी होगा, परंतु सरम नहीं होगी
बात–बात में माता–पिता को बेटा आँख दिखायेगा' – {गोपी (1970)}

माँ की गोद से निकलकर जब बच्चा प्रथम बार चलना सीखता है तब वह चलने के प्रयास में बार–बार गिरता है, फिर भी वह हरबार पूरे आत्मविश्वास के साथ उठता है और पुनः चलने की कोशिश करता है। उसकी यह क्रिया

निरंतर चलती ही रहती है। मगर जैसे–जैसे वह बड़ा होता जाता है उसके आत्मविश्वास में कमी आती जाती है। गाँधीजी का आदर्श चरित सर्वथा प्रचारित प्रसारित है। उन्होंने मनुष्य को हर परिस्थिति में साहस व धैर्य रखने की सलाह दी है।

कुंवर नारायण जी ने कहा भी है–

''कोई दुःख मनुष्य के साहस से बड़ा नहीं
हारा वही जो लड़ा नहीं'
इस पर केंद्रित यह गीत–
'जिंदगी हँसने – गाने के लिए है पल दो पल
इसे खोना नहीं, खो के रोना नहीं
तेरी गिरने में भी तेरी हार है
तू आदमी है अवतार नहीं' – {जमीर (1975)}

गाँधीजी ने हमेशा सत्य, अहिंसा की राह पर चलते रहने की शिक्षा दी है। मनुष्य को बुराई से बचकर सच्चे व नेक राह पर चलते रहने का सबक सिखाया है। 1986 में बनी फिल्म 'अंकुश' के इस गीत में इसी भाव को व्यक्त किया गया है :

'इतनी शक्ति हमें देना दाता
मन का विश्वास कमजोर होना
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे
भूलकर भी कोई भूल हो न'

गाँधीजी ने कहा है– ''प्रेमभाव के लिए ही आज हम जी रहे हैं, इसके साक्षी स्वयं हम सब हैं। हम पश्चिम की आधुनिक सभ्यता के भ्रम में पड़े हुए प्राचीन सभ्यता को भूलकर शस्त्र – क्रिया की पूजा करते हैं और सर्व–धर्म के सारांश, अहिंसा तत्व को भूल जाते हैं।''

'इंसाफ की डगर पे
बच्चों दिखाओ चल के
ये देश है तुम्हारा
नेता तुम्हीं हो कल के' – {गंगा–जमुना (1961)}

2006 में राजकुमार हिरानी द्वारा निर्मित फिल्म 'लगे रहो मुन्ना भाई' आई। जिसने हिंदी सिने जगत को एक नया शब्द दिया 'गाँधी गिरी'। इस फिल्म में गाँधीजी के विचारों को बड़े ही मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किया गया। गाँधीजी के संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रदर्शित करता यह गीत :

'माटी पुकारे तुझे देश पुकारे
आ जा रे अब आ जा रे....
भूले हम राहें हमें राह दिखा दे
आ जा रे राह दिखा दे....
ऐनक पहनें लाठी पकड़े
चलते थे वो शान से
जालिम काँपे थर–थर–थर
सुनकर उनका नाम रे...
कद था उनका छोटा–सा

और सरपट उनकी चाल रे
दुबले से पतले से थे वो
चलते सीना तान के
बंदे में था दम वंदे मातरम......'

निष्कर्ष

इस प्रकार हिंदी फिल्मी गीतों में मनोरंजन की प्रमुखता तो रही है, परंतु उसमें साहित्य भी होता है, संदेश भी होता है। हिंदी फिल्मी गीतों में गाँधीजी के अनेक सिद्धांतों, आदर्शों का प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष समावेश उन्हें जन–जन तक पहुँचाने में प्रभावशाली भूमिका निभाता है।

संदर्भ सूची

1. देवधर, सुनील केशव, *'बड़े अनमोल गीतों के बोल'*, बुकमार्क पब्लिकेशंस, पुणे, 2017।
2. जैन, सुमन, *'गाँधी : विचार और साहित्य'*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010।
3. लाल, बसंत कुमार, *'समकालीन भारतीय दर्शन'*, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1998।
4. शर्मा, रामविलास, *गाँधी अंबेडकर, लोहिया और भारतीय इतिहास की समस्याएँ'*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000।
5. शर्मा, प्रदीप कुमार, *'महात्मा गाँधी का सत्य, अहिंसा एवं हिंदी प्रेम'*, नए पल्लव, भाग–1,पटना, 2016।
6. Dutta, D. M., '*The philosophy of Mahatma Gandhi*', University of Culcutta,1968.
7. Gandhi, M. K., '*An autobiography or the story of my experiment with truth*', Navjeevan Publishing House, Ahmedabad, 1927.

****